4

दासत्व का समय

मिसर में प्रवास से लेकर वहां से कूच करने तक, 1706-1491 ई.पू. (निर्गमन 1-14)

I. इब्रानी दासता के समय में मिसर

प्राचीन मिसर के इतिहास को तीन कालों में बांटा जाता है:

1. **प्राचीन साम्राज्य।** अज्ञात काल से लेकर 2100 ई.पू. तक।

2. **मध्यम या हिज़्सॉस साम्राज्य,** 2100–1650 ई.पू.।

3. **नया साम्राज्य,** 1650–525 ई.पू.। हिज़्सॉस के निष्कासन से फारसी साम्राज्य द्वारा मिसर को मिला लेने तक।

प्रथम काल में, मीनस ने निचले मिसर के कबीलों को इकट्ठा करके प्राचीनतम राजधानी, मैज़्फिस और मिसर पर शासन करने वाले इज़्कज़ीस में से सबसे पहले राजवंश की स्थापना की थी। सदियों बाद चौथे राजवंश ने बड़े-बड़े पिरामिड बनाए और बाद में बारहवें राजवंश के इस काल में ऊपरी मिसर के तेबेस में सज़ा हस्तांतरित कर दी, जहां उन्होंने प्रथम काल के इस सबसे गरिमापूर्ण युग की शुरुआत की थी।

हिज़्सॉस या मध्य साम्राज्य के चरवाहा राजे एशिया से आने वाले सामी हमलावर थे। योग्य प्रबन्धक होने के बावजूद अशिष्ट और असज़्य होने के कारण उनके शासन में मिसरी सज़्यता को बड़ा नुकसान हुआ।

नया साम्राज्य अमोसिस ने आरज़्भ किया था। हिज़्सॉस को निकालकर प्रसिद्ध अठारहवां राजवंश स्थापित करने वालों में मिसरियों का सिकन्दर थोथमस तृतीय भी हुआ। उन्नीसवें राजवंश के साथ, इसने मिसर के इतिहास में सबसे शानदार युग की रचना की। यह सज़्भव है कि इब्रानी लोगों का कसदिया से जाना मध्यकाल के प्रथम भाग में और मिसर में जाना मध्यकाल के अंत में हुआ था। इससे यह पता चल जाएगा कि फिरौनों ने इब्राहीम, यूसुफ और याकूब से कैसा व्यवहार किया था। सामी लोग मिसरी लोगों की तरह विदेशी लोगों से घृणा नहीं करते थे।

II. उत्पीड़न

उत्पज़ि की पुस्तक के अंत तक मिसरी लोगों का इब्रानियों से व्यवहार ठीक था। निर्गमन की पुस्तक के आरज़्भ में दासों की एक जाति मिलती है। मिसर देश उनकी ''बंधुआई का घर'' बन चुका है। बाइबल के पवित्र इतिहास के मुताबिक यह चुप्पी सदियों

तक रही।[1] राजा आते-जाते रहते हैं, युद्ध होते रह सकते हैं, भव्य मन्दिर जिनके खण्डहर आज भी संसार को चकित करते हैं, बनाए जा सकते हैं, परन्तु ईश्वरीय इतिहास में केवल सांसारिक महिमा को महत्व नहीं दिया जाता। प्रतिज्ञा किए हुए छुटकारे के विकास में नई उन्नति के लिए घड़ी की सुई चलने तक कहानी आगे नहीं बढ़ती।

अन्ततः ''मिसर में एक नया राजा गद्दी पर बैठा जो यूसुफ को नहीं जानता था'' (निर्ग. 1:8)। बड़े-बड़े लाभ शीघ्र ही भुला दिए जाते हैं। सलमीस के चौदह वर्षों में ही थमिस्टोज़्लस को देश से निकाल दिया गया था; वाटरलू के सत्रह वर्षों के भीतर ही लंदन में एक भीड़ ने ड्यूक ऑफ़ वलिंग्टन पर आक्रमण कर दिया था। हैरानी की बात नहीं होगी कि सदियों बाद इब्रानी यूसुफ द्वारा मिसरियों की महान सेवा को भुला दिया गया। ''नया राजा'' सम्भवतः उस क्रांति की ओर संकेत है जिससे मिसर से सामी जाति के हिज़्सॉस को निकालकर स्थानीय लोगों ने अपना अधिकार कर लिया था। दासता के समय के फिरौन और निर्गमन सेती प्रथम, रामसेस द्वितीय और मिनाफता सब उन्नीसवें राजवंश के राजा थे। सेती ने इब्रानी लोगों की गिनती तेज़ी से बढ़ने पर सावधान रहने को कहा और हिज़्सॉस के आक्रमण और देर तक उसके शासन को याद कराते हुए इब्रानी लोगों का हौसला तोड़ने का निश्चय किया। उसने उन्हें भट्ठों तक सीमित कर दिया लेकिन वे फिर भी बढ़ते रहे। अन्त में उसने पैदा होने वाले उनके हर लड़के को नील नदी में फैंकने का आदेश दे दिया। तभी छुड़ाने वाले का आना हुआ।

III. मूसा का जन्म और मिशन

देश भक्त, कवि, स्वतन्त्रता दिलाने वाले, व्यवस्था देने वाले, इतिहासकार, *मर्द* सब में मूसा इतिहास का सर्वश्रेष्ठ मानवीय पात्र है। अठारहवें और उन्नीसवें राजवंशों के फिरौनों ने अपने सामर्थ के कामों को पत्थरों के नीचे दफ़ना दिया था। फिर भी उनके नाम हाल ही में निकाली गई उनकी ममियों की तरह धुंधले से मिलते हैं। मूसा ने एक धर्म में एक कौम का इतिहास लिखा। उस रात के बजाय जब वह घमण्डी फिरौन की रजामंदी से परमेश्वर के लोगों को निकाल कर ले गया था उसका नाम तैंतीस शताब्दियों के बाद और भी बड़ा हो गया। उसके जीवन को स्वाभाविक तौर पर तीन बराबर भागों में बांटा जाता है: पहले चालीस वर्ष मिसर में; दूसरे चालीस वर्ष मिद्यान में निर्वासन के समय; अंतिम चालीस वर्ष इस्राएल के छुटकारा दिलाने वाले अर्थात अगुवे और संगठित करने वाले के रूप में। अन्तिम चालीस वर्षों के दौरान उसका इतिहास उसके लोगों का इतिहास है, पर मुख्यतया यह अगले काल में आ जाता है।

1. मिसर में चालीस वर्ष। *-क. उसका जन्म व शिक्षा।* लेवी के गोत्र के धर्मी माता-पिता, अम्राम और योकेबेद से मूसा का जन्म हुआ था। उनके बड़े बच्चों, मिरियम और हारून का जन्म सेती के क्रूर आदेश से पहले हो गया लगता है। उनकी तीसरी संतान का जन्म इस आदेश के बाद ही हुआ। उसके जन्म की बात तीन महीने तक अधिकारियों से छुपाकर रखी गई। जब यह भेद अधिक देर तक छुपाना सम्भव न रहा तो इस सुन्दर बालक को सरकंडों की टोकरी में रखकर नील नदी में छोड़ दिया गया। फिरौन की बेटी उसे देखकर

गोद ले लेती है और उसका नाम मूसा रखती है। मिरियम, जो टोकरी की कमज़ोर नाव पर और उसमें पड़े कीमती सामान पर नज़र रखे हुए थी, एक दाई को बुलाने की इच्छा जताती है और अपनी ही मां को बुला लाती है। इस प्रकार परमेश्वर के प्रबन्ध में उस देश के भावी मित्र, और उस जाति के उद्धारक का पालन-पोषण उस समय के संसार की सबसे सज़्पन्न सज़्यता में (प्रेरितों 7:22), और अपनी इब्रानी मां के द्वारा, उस समय के संसार के सबसे शानदार आत्मिक विश्वास में हुआ।

ख. मूसा की पसन्द।-मूसा बड़ा हो जाता है। अपने इब्रानी होने का रहस्य केवल उसे ही मालूम है। एक मिसरी अधिकारी द्वारा एक इब्रानी को मारते देखकर वह उस मिसरी की हत्या कर उसकी लाश को रेत में दबा देता है। इसमें कोई संदेह नहीं कि मूसा की नसों में वह गर्म खून था जो अन्याय नहीं सह सकता था। परन्तु यह काम उस समय आवेग में आकर नहीं किया गया था। इब्रानियों 11:24-26 और प्रेरितों 7:23-25 से दो बातें स्पष्ट होती हैं: (1) उसने जानबूझकर और स्वेच्छा से मिसर के महलों में रहना त्याग दिया था, ताकि वह अपने भाइयों के लिए लड़ सके; (2) उसे इस्राएल को स्वतन्त्रता दिलाने के लिए साहसी कदम उठाने की जरूरत थी। लेकिन अभी समय नहीं आया था, ज़्योंकि अभी न तो वह और न उसके लोग इसके लिए तैयार थे। ज़ंजीरों का भारी होना और मूसा का स्वयं अपने आप को महान कार्य के लिए अनुशासित करना आवश्यक था। मिसर कला और विज्ञान का एक अच्छा केन्द्र था; अपनी मां की गोद में उसने धर्म के अच्छे आवश्यक सबक सीख लिए थे; परन्तु अपने बहुत बड़े मिशन के लिए तैयार होने से पहले उसे परमेश्वर के साथ और अकेले होना आवश्यक था। मिद्यान के जंगल और सीनै के एकांत में, अपने गुरु के रूप में परमेश्वर के साथ उसे अपना विश्वविद्यालय मिलता है और वहां वह अपनी शिक्षा प्राप्त करता है।

2. मिद्यान में चालीस वर्ष।-मूसा लाल सागर के पूर्व की ओर मिद्यान देश में भाग जाता है। एक दिन शाम को जब वह एक कुएं के पास बैठा था तो मिद्यान के याजक यित्रो की सात बेटियां अपनी भेड़-बकरियों को पानी पिलाने आईं। कुछ गंवार बद्दू चरवाहों ने उनकी भेड़-बकरियों को पीछे कर दिया। अपने उत्पीड़ित भाइयों की ओर से साहस दिखाने वाले मूसा का मन इन उत्पीड़ित लड़कियों की सहायता किए बिना न रह पाया। इस फरार ''मिसरी'' की समय पर सहायता एक अच्छी पहचान बनाने में सहायक हुई। उसने यित्रो की बेटी सिपोरा से शादी कर ली। चालीस वर्ष तक वह मिद्यान में उसकी भेड़-बकरियों को चराता रहा। वहां वह उस ऊबड़-खाबड़ देश से परिचित हुआ जिसमें से उसने प्रतिज्ञा किए हुए देश में ले जाने के लिए अपने लोगों की अगुआई करनी थी। अन्त में परमेश्वर उसे जलती हुई झाड़ी में दर्शन देता है। वह उस पर अपने आप को ''इब्राहीम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर और याकूब का परमेश्वर'' के रूप में प्रकट करता है,[2] उस वाचा को दोहराता है जिसने पुरखाओं के काल में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी, और मूसा को इस्राएल को छुड़ाने का आदेश देता है। मूसा, जो अब कमज़ोर और बोलने में धीमा हो चुका है, उस मिशन पर जाने से हिचकिचाता है जिसके कारण उसे कचहरियों और राजा के

सामने जाना आवश्यक था। परन्तु परमेश्वर की ओर से उसकी सिफारिशों के रूप में अलौकिक चिह्नों से लैस, और अपने प्रवज़्ता के रूप में हारून को अपने साथ लेने की आज्ञा पाकर मूसा मिसर में लौट जाता है।

IV. बहुत बड़ा संघर्ष

इसके बाद इतिहास का सबसे महत्वपूर्ण संघर्ष होता है। मूसा मिद्यान देश से जाकर हारून से मुलाकात करता है। दोनों अपने लोगों के बुज़ुर्गों के पास जाकर उन्हें अपना मिशन बताते हैं, और ठहराए हुए चिह्नों के साथ उसकी पुष्टि करते हैं। उत्पीड़ित लोग उनके मिशन को मान लेते हैं और वाचा करने वाले अपने पूर्वजों के परमेश्वर के सामने श्रद्धा से झुक जाते हैं। फिरौन के पास उन्हें अधिक सफलता नहीं मिलती। यहोवा के नाम में वे कहते हैं कि इस्राएल को यहोवा के लिए बलिदान करने के लिए जंगल में तीन दिन की यात्रा करके जाने दिया जाए। यदि वह ऐसी विनम्र बिनती को मान लेता तो यह फिरौन के लिए भी अच्छा होना था और उसके लोगों के लिए भी। इसका पहला असर उनकी ज़ंजीरों और बोझ को बढ़ाना ही हुआ। फिरौन की ज़िद और अपने दुखी भाइयों की ओर से घोर निंदा के कारण मूसा बहुत परेशान होता है। एक के बाद एक ज़्लेश के रूप में दस आफतें या ''विपज़ियां'' आती हैं जिनमें पानी का लहू बन जाना, मेंढक, जुएं (कुटकियां), मज़्खियां (डांस), पशुओं की महामारी, फोड़े, ओले, टिड्डियां, अंधकार, पहलौठों की मृत्यु शामिल हैं।

1. झगड़े का रूप। यह झगड़ा किसी गुलाम जाति या उसके सताने वालों के बीच का झगड़ा नहीं था। यह विवाद तो यहोवा और मिसर के देवताओं के बीच का था। लगभग हर महामारी मिसर के लिए एक प्राकृतिक आपदा थी; परन्तु उनका आश्चर्यकर्म से होना कई परिस्थितियों से देखा जाता है: उनकी अधिकता, इतनी जल्दी से बढ़ना; वे विपज़ियां मूसा के कहने से ही आतीं और चली जाती थीं; पहली तीन को छोड़ इस्राएल को छूट दी गई और अन्ततः हर महामारी मिसर की किसी न किसी मूर्तिपूजा पर प्रहार था।

2. झगड़े की आवश्यकता। याद रखें कि पूरी पृथ्वी पर केवल एक ही जाति या कौम ऐसी थी जिसने परमेश्वर की एकता और आत्मिकता को बनाए रखा; और गुलाम होने के कारण उन्हें भी अपने विश्वास और राष्ट्रीय पहचान को खोने का खतरा था। संज़्या, सज़्पज़ि, संस्कृति, सामर्थ सब एक सौ एक प्रतिशत उनके विरुद्ध थे। एक सबक आवश्यक है जिसे कभी जुलाया नहीं जाए और वह कभी भूला भी नहीं। मिसर की मूर्तियां मिट्टी में मिल गईं या पुरातत्वविदों के संग्रहालयों में पड़ी हैं परन्तु इस्राएल के परमेश्वर की आराधना सज़्य संसार द्वारा आज भी की जाती है। मिसर में दिखाए गए चिह्नों और अद्‌भुत कामों को इब्रानी साहित्य में विशेष स्थान मिला। वे राष्ट्रीय विवेक में इस हद तक रंग गए कि उनसे सबसे असरदायक बल बना जो बहुदेववाद के आकर्षण में भी इस्राएल के पूर्वजों के विश्वास को बनाए रखने में सहायक था।

3. झगड़े का अन्त। –अंतिम प्रहार के रूप में मौत का फरिश्ता मिसर के महल से लेकर झोंपड़ी तक दस्तक देता है और मिसरियों के पहलौठे मर जाते हैं। परन्तु इब्रानी लोगों

के घर सुरक्षित रहते हैं। परमेश्वर की आज्ञा मानकर वे फसह का आरज़्भ करते हैं। मेमना काटा जाता है; इसका लहू इब्रानी विश्वास के एक प्रतीक के रूप में उनके घरों की देहलियों पर लगाया जाता है। रहस्यमयी संदेशवाहक उन घरों के ऊपर से जहां यह पर्व मनाया जा रहा था, बिना कोई हानि पहुंचाए गुज़र जाता है। मिसर से बहुत बड़ी चीख निकलती है। बंधन टूट जाते हैं और इस्राएल स्वतन्त्रता के लिए वहां से निकल आता है। अंतिम बार फिरौन का मन कठोर होता है। वह पीछा करता है; इस्राएल पहाड़ों के तंग रास्ते में घिर जाता है, आगे लाल सागर है; समुद्र दो भाग हो जाता है; इस्राएल उसके बीच में से निकलकर बच जाता है; मिसरी पीछा करते हैं, और समुद्र उन्हें ढांप लेता है।[3]

V. मिसर में प्रवास का असर

मिसर की दासता का अनुभव कड़वा तो था परन्तु इसके परिणाम बहुत महत्वपूर्ण हुए।

1. इसने इस्राएल को एक कौम बना दिया। –मिसर में वे बारह प्रवासी परिवारों के एक दल के रूप में गए थे। याकूब और उसकी संतान कुल मिलाकर सज़र लोग थे। दासों को मिलाकर, पूरा कबीला दो–तीन हज़ार लोगों का होगा। यदि वे कनान में ही रहते, तो हो सकता था कि वे बारह छोटे–छोटे घुमज़्कड़ कबीलों में बंट जाते। लेकिन घनी आबादी वाले देश में भारी उत्पीड़न सहते हुए वे एक बड़ी कौम बन गए।

2. इससे वे सज़्य बन गए। –कनान में वे खानाबदोश थे। पहले वे कितने सज़्य थे यह हम ऊपर देख चुके हैं। परन्तु मिसर में वे चरवाहे नहीं रहे। मिसर आज भी कृषि प्रधान देश है, और पहले भी होगा। इससे भी बढ़कर, हज़ार वर्ष तक यह संसार के बौद्धिक जीवन तथा सज़्यता में अग्रणी देश था। इब्रानी लोगों को ऐसे स्कूल में ज़्यादा देर तक रहने का दान ही मिला था। मूसा को विशेष तौर पर, ''मिसरियों की सारी विद्या पढ़ाई गई'' थी (प्रेरितों 7:22); परन्तु मन्दिर के निर्माण के वृज़ांत से साफ पता चलता है कि उसके पास कुशल सेनानायक थे (निर्गमन 25–40)।

3. इसकी अंतिम घटनाओं से उनमें राष्ट्रीय विश्वास दृढ़ हुआ। –यदि वे स्थाई तौर पर मिसर में रहते, तो उनका कौमी विश्वास और कौमी पहचान खत्म हो जाती। परन्तु मिसर उनके लिए वह ज़्लैकबोर्ड बन गया जिस पर यहोवा ने इस्राएल को कभी न भूलने वाले सबक लिख दिए। बार–बार मूर्तिपूजा में गिर जाने के बावजूद अधिकतर वे कौमी विश्वास में बने रहे। और अब उन्होंने कनान देश में लौटकर उस देश में विजय पाकर उस पर कज़्जा करना है जिसमें, दो सौ साल तक, इब्राहीम, इसहाक और याकूब परदेशियों की तरह गए थे। लेकिन तुरन्त ऐसा नहीं होना था। कुछ दिन के सफर के बाद वे कनान में पहुंच सकते थे। परन्तु प्रतिज्ञा किए हुए देश को पाने के योग्य होने से पहले उनके लिए संगठन का कार्य और चालीस वर्ष का अनुशासन सीखना आवश्यक था।

पाद टिप्पणियां

[1]मिसर में प्रवास की अवधि एक अनसुलझी समस्या है। इब्रानी बाइबल इसे चार सौ (अधिक सही, चार सौ तीस) वर्ष बताती है, तु. उत्पत्ति 15:13; निर्ग. 12:40, 44; प्रेरितों 7:6. निर्गमन. 12:40, 41 के सप्तति अनुवाद, जिसमें से गला. 3:17 में पौलुस बताता है, कनान में पुरखाओं के चार सौ तीस वर्ष घूमने की बात मिलती है। [2]निर्ग. 3:6. [3]निकलने के स्थान पर और अच्छी चर्चा के लिए देखिए मैज़र्वे की ''लैण्ड्स ऑफ़ द बाइबल,'' पृ. 438–443.